Research Journal of Language, Literature and Humanities ISSN 2348-6252
Vol. **2(12), 1**-4, December **(2015)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

डी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में प्रमाप विधि से पढ़ाने पर उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन (डाइट बिजलपुर, इन्दौर के संदर्भ में)

सरिता बोबड़े
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एजुकेशन इन्स्टीट्यूट, इन्दौर भारत

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received th 2015, revised th 2015, accepted th 2015

सारांश

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत डी. एड पाठ्यक्रम के विषय शिक्षा मनोविज्ञान के चयनित प्रकरणों पर प्रमाप द्वारा अध्यापन एवं परम्परागत अध्यापन द्वारा प्रमाप की प्रभाविता का उनकी उपलब्धि, के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में इन्दौर शहर के शासकीय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) के डी. एड. द्वितिय वर्ष में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 60 विद्यार्थियों को लिया गया था। शोध के लिए पूर्व परीक्षण पश्च परीक्षण नियंत्रित समूह प्राकल्प का प्रयोग किया गया, जिसमें प्रयोगात्मक समूह को प्रमाप विधि से तथा नियंत्रित समूह को परम्परागत विधि से 20 दिनों तक (अवकाश के दिनों कों छोड़कर) प्रतिदिन 50 मिनिट की अवधि तक अध्ययन कराया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया गया था। विद्यार्थियों की प्रमाप के प्रति प्रतिकियाओं के मापन करने हेतु प्रतिकिया मापनी का निर्माण किया गया था। प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए द्वि. मार्गीय सहप्रकर विश्लेष्ण परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से प्रदर्शित हुआ कि प्रमाप विधि, परम्परागत विधि से उपलब्धि के संदर्भ में प्रभावी पायी गयी।

शब्दकुंजीः अधिगम, शिक्षा मनोविज्ञान, प्राकल्प, प्रमाप, सहसंबंधित, शासकीय, उपलब्धि, परीक्षण,

प्रस्तावना

स्व अनुदेशन सामग्री से शिक्षा अधिगम प्रक्रिया में सकारात्मक प्रभाव पडा हैं। आज शिक्षण के नये आयाम – प्रतिमान दिए जा रहे हैं। प्रमाप उनमें से ही एक नवाचार हैं। प्रमाप एक स्व–अनुदेशन (स्व–अधिगम) सामग्री है जो स्वतः परिपूर्ण एवं स्वतंत्र इकाई होती है, जिसके कक्षा–शिक्षण में प्रयोग में शिक्षक एक सकारात्मक भूमिका अदा करता है। प्रमाप में निश्चित विषयवस्तु को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति, रूचि, क्षमता व योग्यता के अनुरूप अध्ययन करते हुए प्रमाप के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता हैं। प्रमाप में ऐसे कार्यकलापों को करने के लिए कार्य के प्रारूप में दिए जाते है, जिनको करने मात्र से शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त कर लेते हैं। अतः प्रमाप जैसी नवाचारित एवं परिपूर्ण स्व–अधिगम सामग्री का निर्माण शिक्षा मनोविज्ञान जैसे विषय को लेकर करना विद्यार्थियों हेतु अधिगम अनुभवों को छात्रों द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। प्रमाप अधिगम सामग्रियों का एक समूह है जिसके प्रत्येक तत्व एक दूसरे से जुड़कर अधिगम कार्य को प्रभावी बनाते हैं[1], तथा विद्यार्थी निश्चित रुप से अधिगम प्राप्त करता है। प्रमाप एक ऐसी शिक्षण विधि है जिसके द्वारा विद्यार्थी अधिगम श्रृंखलाओं के नियोजन के माध्यम से पूर्व निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करते हैं। प्रमाप एक ऐसी शिक्षण विधि है जिसमें कि निश्चित व पूर्व नियोजित अधिगम श्रृंखलाओं के माध्यम से शिक्षा के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति करते हैं।

बी. एफ. स्किनर[2] ने सीखने पर कार्य किया। शिक्षण मशीन का निर्माण किया। इस सामग्री को अभिक्रमित अधिगम का नाम दिया गया। इसमें अभिक्रमित अधिगम सामग्री, कम्प्यूटर सहायक सामग्री, एवं प्रमाप तीनों हैं। इन्हें ही स्व–अनुदेशन सामग्री कहा गया है, प्रमाप इसी का एक प्रकार हैं । वर्तमान में प्रमाप दूरस्थ शिक्षण में अधिक मात्रा में उपयोग होने लगा हैं। अतः प्रमाप अब शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में विभिन्न विषयों में उपयोगी साबित हो चुका हैं।

प्रमाप की परिभाषाः गोल्डस्मिथ[3] के अनुसार ''प्रमाप से तात्पर्य स्वपरिपूर्ण स्वतंत्र तथा नियोजित अधिगम श्रृंखलाओं से हैं जो कि छात्रों के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होता हैं। एरेन्डास एवं सहयोगियों [4] के अनुसार ''प्रमाप अधिगम क्रियाओं का एक ऐसा समूह है जो छात्रों के उपलब्धि के एक उद्देश्य या उद्देश्यों के एक समूह को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता हैं। डॉस्टन[5] के अनुसार'' प्रमाप अनुभवों का ऐसा समूह है, जिसकी रचना ,अधिगमकर्ता के द्वारा निर्दिष्ट या विशिष्ट उद्देश्यों को प्रदर्शित करने में सहायता प्रदान करती हैं''। ''खानवीज[6] के अनुसार :–प्रमाप एक ऐसी विधि है जिसमें कि निश्चित व पूर्व नियोजित अधिगम श्रृंखलाओं के माध्यम से शिक्षा के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति करते हैं। प्रमाप की विशेषताएॅः प्रमाप लक्ष्य समूह (टारगेट ग्रुप) के लिए बनाया जाता हैं, प्रमाप एक स्वअनुदेशन सामग्री होती हैं, छोटे–छोटे पदों में एवं सरल भाषा में होती हैं, प्रमाप की भाषा अंर्तक्रियात्मक होती हैं, प्रमाप शिक्षक की कमी को दूर करता हैं, इसे विद्यार्थी अपनी गति के अनुसार पढ़ता हैं। प्रमाप दूरस्थ शिक्षा (डिस्टेंस मोड) के लिए लाभप्रद होता हैं। अनुदशनात्मक उद्देश्यों (इंस्ट्रक्शनल ऑब्जेक्टिव) पर आधारित होता हैं। प्रमाप उच्चस्तर के शिक्षण के लिए उपयोगी होता हैं, प्रमाप में शब्दों का महत्व अधिक होता हैं, शब्दों का ध्वन्यांकन करना होता हैं। प्रमाप अनुच्छेद के रुप में होता हैं।

प्रमाप की संरचना या घटकः दिशा–निर्देशन, प्रारम्भिक व्यवहार, अंतिम व्यवहार, पूर्व परीक्षण, प्रस्तावना, प्रस्तुतीकरण, सारांश, अभ्यास प्रश्न या समस्यात्मक प्रश्न, पश्च परीक्षण।

प्रमाप के लाभः विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है। इससे छात्र सतत सकिय रहते है। छात्र में स्व–अध्ययन की आदत का विकास होता है,छात्रों में सृजनात्मक चिंतन का विकास होता है, प्रमाप निर्माण की प्रक्रिया से शिक्षक द्वारा छात्रों को सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान देने में सहायता मिलती है, इससे शिक्षक को छात्र के सही मूल्यांकन में मदद मिलती है।

मनोविज्ञान की परिभाषाः मनोविज्ञान की विकास की लम्बी यात्रा के दौरान मनोवैज्ञानिकों एवं मनीषियों ने चिंतन–मनन किया तथा मनोविज्ञान के स्वरुप को निर्धारित किया। मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान की परिभाषाओं की रचना की। जो कुछ इस प्रकार है। गैरिसन व अन्य के अनुसार मनोविज्ञान का संबंध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से है। वुडवर्थ[7] के अनूसार "मनोविज्ञान, वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्तियों की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है"। स्किनर[8] के अनूसार "मनोविज्ञान, व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है"।

अध्ययन के औचित्यः स्वअनुदेशन सामग्री में प्रमाप बहुत प्रचलित सामग्री है। इसमे प्रमाप से संबंधित कई शोध हुए हैं, जो प्रमाप की प्रभाविता से संबंधित है। सेनापति[9], पवॉर[10], पटेल[11], महाराणा[12], हुरमाडे[13], पाटीदार[14], आदि ने प्रमाप के विकास एवं प्रभाविता से संबंधित अध्ययन किए जो कि विभिन्न विषयों पर, विभिन्न आयु समूह के लिए बनाए गए है। उपर्युक्त शोधों से पता चलता है कि अब तक विकसित किए गए प्रमापों का विषय शैक्षिक तकनीकी, कौशल विकास एवं सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण दक्षता, नागरिक शास्त्र, हिन्दी, गणित आदि अनेक विषय रहे हैं; किन्तु शिक्षा मनोविज्ञान विषय पर प्रमाप का विकास नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त पिछले विभिन्न शोध साहित्यों, लघु शोधों एवं परियोजनाओं के अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है कि बुध्दि परीक्षण, व्यक्तित्व मापन, परीक्षण के प्रकार, आदि पर मापन एवं मूल्यांकन विषय के अन्तर्गत प्रमाप निर्माण किया गया है, परन्तु शिक्षा

मनोविज्ञान विषय के डी.एड. पाठ्यक्रम की इकाईयों पर प्रमाप का विकास नहीं किया गया है। अतः इसे डी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों पर ही इसीलिए किया गया क्योकि डी.एड. प्रशिक्षणार्थी विद्यालयों में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अध्यापन कार्य करेंगे, अतः उनमें बालकों की अध्ययन संबंधी आदतों, उनके व्यवहारों को समझने के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है । इसके अतिरिक्त अध्ययन अध्यापन की परिस्थितियों में शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे कि शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाया जा सकता है। अतः डी.एड़. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए शिक्षा मनोविज्ञान विषय का ज्ञान प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक व उपयोगी है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकता, शोधार्थी की रुचि होने के कारण, एवं प्रमाप विकास की वर्तमान संदर्भ में आवश्यकता को समझते हुए अध्ययन के लिए इस विषय का चुनाव किया गया।

अध्ययन के उद्देश्यः प्रमाप विधि से पढ़ाने पर विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांकों की तुलना करना।

परिकल्पनाः प्रमाप की सहायता से पढ़ाने पर विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांको में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं

शोध प्रविधियाँ

शोध विधि तंत्रः प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति प्रयोगात्मक थी। जिसमें शोध का प्राकल्प असमान नियंत्रित समूह प्राकल्प का उपयोग किया गया।

यहॉ $\frac{0 \quad X \quad 0}{0 \qquad 0}$

न्यादर्श में दर्शाए अनुसार, चयनित संस्थान के डी. एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्वक चयनित किया इसमें प्रायोगिक एवं नियंत्रित दोनों समूह का पूर्व उपलब्धि परीक्षण लिया गया। पूर्व परीक्षण लेने के बाद प्रायोगिक समूह के सभी विद्यार्थियों कों उपचार के रुप में प्रमाप स्वगति से पढ़ने को दिया गया। नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों को कोई भी उपचार न देकर उन्हे परम्परागत विधि से पढ़ने दिया गया। फिर उन दोनों समूहों का पश्च परीक्षण लिया गया। इसे निम्न सारणी से समझा जा सकता हैं

तालिका–1
पूर्व एवं पश्च उपलब्धि परीक्षण द्वि समूह

	पूर्व परीक्षण	**उपचार**	**पश्च परीक्षण**
प्रायोगिक समूह	**01**	उपचार	**02**
नियंत्रित समूह	**01**	.....	**02**

तालिका–2
प्राकल्प का योजनाबद्ध विवरण

प्रायोगिक समूह	**नियंत्रित समूह**	**समय**
पूर्व परीक्षण	पूर्व परीक्षण	60 मिनिट
उपचार	.....	20 दिन
पश्च परीक्षण	पश्च परीक्षण	60 मिनिट

समष्टि तथा न्यादर्शः प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु, सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि से शासकीय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) बिजलपुर, इन्दौर का चयन किया गया, इससे सत्र 2013–14 के डी॰एड़॰ प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या माना गया। न्यादर्श हेतु चयनित शासकीय जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के डी॰एड़॰ प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा प्रयोगात्मक समूह(30) एवं नियंत्रित समूह (30) में आवंटित किया गया। विद्यार्थियों की कुल संख्या 60 थी। जो शिक्षा मनोविज्ञान विषय एक अनिवार्य विषय के रुप में पढ़ रहे थे। इस न्यादर्श में पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 14 और 46 थी। न्यादर्श में डी॰एड़॰ प्रशिक्षणार्थियों की आयु 22 से 40 वर्ष के मध्य थी। अधिकांश प्रशिक्षणार्थी मध्यम, सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा कुछ प्रशिक्षणार्थी निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर से सम्बन्ध रखते थे। न्यादर्श में चयनित किये गये प्रशिक्षणार्थी शहरी एवं ग्रामीण दोनो क्षेत्रों से सम्बंधित थे।

उपकरण तथा तकनीकें: शोध के लिए उपकरण का चयन महत्वपूर्ण होता हैं ; क्योंकि इसके द्वारा ही शोध के चरों का मापन किया जाता हैं। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में चरों का मापन अग्रलिखित उपकरणों के माध्यम से किया गया हैं। उपलब्धि परीक्षण शिक्षा मनोविज्ञान विषय के चयनित प्रकरणों पर विकसित प्रमाप की प्रभाविता का पता लगाने हेतु शोधार्थी द्वारा उपलब्धि परीक्षण का निर्माण किया गया था। इस परीक्षण में 50 बहुविकल्पिय प्रश्नों को शामिल किया गया था। जिसमें 15 प्रश्न सत्य या असत्य के, 15 प्रश्न रिक्त स्थानों की पूर्ति के, 10 प्रश्न विकल्पों में से सही विकल्प का चयन के, 10 प्रश्न सही जोड़ी मिलान। इस प्रकार इस उपलब्धि परीक्षण के लिए समय 1 घण्टा रखा गया था जिसके अंक 100 निर्धारित किये गये थें। यह उपलब्धि परीक्षण परिशिष्ट 'ब' में दिया गया हैं।

तालिका–3
उपलब्धि परीक्षण का प्रारुप

बहुविकल्पिय प्रश्नों के प्रकार	**सत्य या असत्य**	**रिक्त स्थानों की पूर्ति**	**सही विकल्प का चयन**	**सही जोड़ी मिलान**	**प्रश्नों की कुल संख्या**
प्रश्नों की संख्या	15	15	10	10	50
प्रत्येक प्रश्न के अंक	2	2	2	2	कुल अंक 100

प्रदत्त संचयन तथा विश्लेषण की प्रविधिः प्रदत्तों के संकलन हेतु जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) बीजलपुर जिला इन्दौर के डी॰एड़॰ द्वितीय वर्ष के सत्र 2013–14 के प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया। सर्वप्रथम डाईट बीजलपुर प्राचार्य महोदयजी से अनुमति प्राप्त कर शोध कार्य की प्रक्रिया का क्रियान्वयन किया गया। प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित दोनो समूहों को पूर्व उपलब्धि परीक्षण दिया गया। पूर्व परीक्षण के लिए दोनो समूहों के विद्यार्थियों को 60 मिनिट (संस्थान के दो कालांश) का समय दिया गया। एक कक्षा के दो विभाग थे, उनकों साथ में लाकर पूर्व परीक्षण दिया गया ताकि सबकों एक साथ एक जैसे निर्देश दे सकें। इस प्रकार प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह दोनों का पूर्व परीक्षण लिया गया। इसके पश्चात दूसरे दिन तृतीय कालांश में प्रयोगात्मक समूह के प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को प्रमाप पढ़ने को दिया गया। शोधार्थी द्वारा उपचार प्रदान करने से पूर्व आवश्यक निर्देश भी दिए गए। उन्हें बताया गया कि प्रमाप स्वगति से पढ़ने की स्वतंत्रता है प्रमाप को वे अपने साथ रख सकते है। प्रतिदिन इसे साथ लाने को कहा गया है तृतीय कालांश में फिर से उन्हे शब्दशः पढ़ने के लिए कहा गया, तथा उन्हे बताया गया कि प्रमाप में किसी भी प्रकार की भाषागत, व्याकरणगत, या समझने में कठिनाई होने पर तुरंत शोधार्थी को पुछ सकतें है। इस प्रकार विषयवस्तु को समझाने के साथ–साथ आने वाली कठिनाईयों को तुरंत सुलझाया गया। इसी तरह प्रत्येक दिन तृतीय कालांश में छुट्टियों को छोड़कर बीस (20) दिनों तक उपचार दिया गया। दूसरी ओर इसी के विपरीत नियंत्रित समूह कों वही पाठ्यसामग्री परम्परागत विधि से पढने दिया गया। अर्थात उन्हें प्रमाप नही दिया गया। उपचार के समाप्त होने के पश्चात् प्रायोगिक समूह और नियंत्रित समूह दोनों समूहों को पश्च परीक्षण के रुप में उपलब्धि परीक्षण दिया गया। पश्च परीक्षण के लिए साठ (60) मिनिट का समय दिया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण प्रमाप विधि से पढ़ाने पर विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांकों की तुलना करना; इस हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण सहसम्बंधित–परीक्षण सहसंबंधित "टी" परीक्षण की सहायता से किया गया ।

परिणाम एवं विवेचना

प्रमाप विधि से पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांकों की तुलना करना– प्रस्तुत शोध का प्रथम उद्देश्य ''प्रमाप विधि से पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांकों की तुलना करना ''था। प्रस्तुत उद्देश्य हेतु

प्रयोगात्मक समूह के 30 विद्यार्थियों पर उपचार पूर्व एवं उपचार पश्चात् परीक्षण लगाकर प्रदत्त संकलित किए, प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण सहसंबंधित टी– परीक्षण द्वारा किया गया, जिसके परिणाम निम्न तालिका में दिये गये है।

तालिकाः शिक्षा मनोविज्ञान विषय में उपलब्धि के प्रयोगात्मक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य, संख्या, प्रमाणिक विचलन, सहसंबंधित गुणांक तथा टी–मान दर्शाती तालिका–

तालिका–4
शिक्षा मनोविज्ञान विषय में उपलब्धि के प्रयोगात्मक समूह

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	सहसंबंधित गुणांक	df	t value	sign
पूर्व परीक्षण	30	41.27	10.178	.637	29	17. 515	0.000
पश्च परीक्षण	30	73.20	12.656				

सार्थकता स्तर के 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका से विदित होता है कि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च उपलब्धि परीक्षण हेतु टी मूल्य 17.515 है जबकि df 29 है, प्राप्त **टी** मूल्य स्वतंत्रता की कोटि 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ''प्रमाप विधि से पढ़ाने पर विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है '' निरस्त की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि प्रमाप विधि समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण से प्राप्त उपलब्धि के माध्य फलांक सार्थक रूप से भिन्न है। तालिका से यह भी विदित होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान विषय के पश्च परीक्षण के उपलब्धि माध्य फलांक 73.20 है जो कि पूर्व परीक्षण के उपलब्धि के माध्य फलांक अर्थात 41.27 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रमाप द्वारा दिये गये उपचार का उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि प्रमाप विद्यार्थियों की शिक्षा मनोविज्ञान विषय में उपलब्धि बढ़ाने में सार्थक रूप से प्रभावी हैं। प्रदत्त विश्लेषण से प्राप्त परिणाम स्पष्ट करते हैं, कि अधिकांश विद्यार्थियों ने अधिकतम अंक प्राप्त किये तथा शिक्षा मनोविज्ञान विषय को प्रमाप द्वारा पढ़ना परम्परागत विधि की तुलना में प्रभावीं पाया गया । इसकी विवेचना इस प्रकार है, जैसे–विद्यार्थियों कों विकसित प्रमाप, उसकी विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण अच्छा लगा होगा, एवं उनकी सक्रियता भी बनी रही होगी। प्रमाप विधि द्वारा पढ़ने से उन्हे विषयवस्तु का ज्ञान सरल तरीके एवं व्यवस्थित तरीके से मिला, तथा प्रमाप द्वारा विषयवस्तु अंर्तक्रियात्मक रूप में प्रस्तुत किए जाने के कारण इसके द्वारा विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित किया होगा। यह नवीन विधि शिक्षा मनोविज्ञान विषय की कठिनता को दूर करने में उपयोगी सिद्ध हुई जिससे कि उच्च सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विद्यार्थियो को शिक्षा मनोविज्ञान में उपलब्धि बढ़ाने में प्रमाप विधि, परम्परागत विधि से सार्थक रुप से प्रभावीं रही, इस हेतु पूर्व एवं पश्च उपलब्धि माध्य फलांको की तुलना सहसम्बन्धित टी परीक्षण द्वारा की गयी। इसके सम्भावित कारण यह हो सकते है कि कई विद्यार्थियों की आदत नियमित अध्ययन करने की होती है तो, कुछ केवल नोट्स से समय–समय पर ही पढतें है अतः इसीलिए जिनकी आदत नियमित अध्ययन की होती हैं वे परम्परागत विधि से पढने वाले विद्यार्थी थे । प्रमाप कभी–कभी पढने वाले विद्यार्थियों को दिया गया मान सकते है, या जितनी प्रभावी प्रमाप विधि प्रयोगात्मक समूह के लिए रही उसी अनुपात में परम्परागत विधि नियंत्रित समूह के लिए प्रभावी रहीं ।

अनुशंसाऐं: प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रमाप का विकास किया गया था, जिसको मनोवैज्ञानिक, तार्किक एवं क्रमबद्ध रुप से प्रस्तुत किया गया था। अतः इसके शैक्षिक निहितार्थ एवं अनुशंसाऍं निम्न है अतः दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों, जिसमें निम्न एवं उच्च स्तर के शिक्षण हेतु इस प्रकार की सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। ऐसे शिक्षक जिन्होंने पूर्व में शिक्षा मनोविज्ञान विषय नहीं पढ़ा है वे भी इस प्रकार की सामग्री को पढ़कर लाभान्वित हो सकते है। महाविद्यालयीन स्तर पर प्रायः शिक्षकों द्वारा व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जाता है, अतः स्वअनुदेशन सामग्री (प्रमाप) का उपयोग कर विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय बनाए रखा जा सकता है। उनकी अध्ययन में रुचि उत्पन्न की जा सकती है। प्रमाप से समय की बचत होती है विद्यार्थी प्रमाप को पढ़कर उसमें दिए अन्तर्क्रिया प्रश्नों से स्वयं के अधिगम की जॉच कर सकते है। पाठ्यपुस्तक लेखकः–पाठ्यपुस्तक लेखक को विषयवस्तु को इस प्रकार से प्रस्तुत करना होगा कि अधिकांश विद्यार्थी जिससे अल्पगति अधिगमकर्ता, अति एवं मध्यम बुद्धि प्राप्त विद्यार्थी भी उसका लाभ प्राप्त कर सकें। अतः इसके लिए हम स्वअधिगम सामग्री का विकास कर सकते है। अध्यापकः प्रस्तुत शोंध से अध्यापक मार्गदर्शन प्राप्त करके वह जिस विषय को पढ़ा रहे है उसके विभिन्न प्रकरणों पर प्रमाप का विकास कर सकतें है। इसे वह अपनें विद्यार्थियों के स्तर व आवश्यकता के अनुसार बना सकतें है। अगर कोई शिक्षक इस प्रकार का कार्य करते हैं, तो वे अपने विषय में अधिक से अधिक अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त कर सकतें हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे शिक्षक जो शैक्षिक तकनीकी व प्रमाप के विकास की प्रक्रिया से परिचित हैं । वे प्रमाप के विकास का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कार्यशाला का आयोजन कर सकतें हैं। इससे कई विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते हैं।

अन्य शोधकर्ताओं के लिए भविष्य में शोध हेतु सुझाव शिक्षा मनोविज्ञान के अन्य प्रकरणों पर भी प्रमाप का विकास किया जा सकता हैं। प्रस्तुत अध्ययन से बड़ा न्यादर्श लेकर भी शोधकार्य किया जा सकता हैं। यह प्रमाप डी.एड़ के शिक्षा मनोविज्ञान विषय के चयनित प्रकरणों के लिए विकसित किया गया था, इसके अलावा इसे बी.एड़. और एम.एड़ स्तर के लिए भी विकसित किया जा सकता हैं। प्रमाप का विकास एम.एड़. स्तर पर प्रगत षिक्षा मनोविज्ञान, सांख्यिकीय एवं षोध प्रविधि जैसे विषय के प्रकरणों पर भी किया जा सकता हैं। प्रमाप को विभिन्न भाषाओं में विकसित किया जा सकता हैं। विभिन्न चरों जैसे –व्यक्तित्व, अभिक्षमता, बुद्धि, रुचि, को लेकर भी प्रमाप की प्रभाविता का अध्ययन किया जा सकता हैं

सन्दर्भ सूची

1 थार्नडाइक ई.एल., शैक्षिक तकनीकी के मूलतत्व, लायल बुक डिपों, मेरठ, भारत, **(1950)**

2 स्किनर बी.एफ., टेकनॉलॉजी ऑफ टीचिंग, एप्लेटन सेन्चुरी क्राफ्ट, न्यूयार्क, नई दिल्ली, भारत. **(1968)**

3 गोल्डस्मिथ एल., शैक्षिक तकनीकी में नवाचार, आर लाल बुक डिपों, मेरठ, भारत, **(1956)**

4 एरेन्डॉस एवं सहयोगियों, शिक्षा में नवाचार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, भारत, **(1971)**

5 डॉस्टन एम., अभिक्रमित स्वअनुदेशन सामग्री, कॉमनवेल्थ पब्लिशर, न्यू दिल्ली, भारत, **(1956)**

6 खानवीस, मॉडर्न साइंस टाचिंग, धनपत राय एण्ड सन्स, न्यू दिल्ली, भारत, **(1956)**

7 वुडवर्थ आर, एस., एक्सपेरिमेण्टल साइकोलॉजी, आक्सफोर्ड एवं आइ बी एच पब्लिशिंग, न्यूयार्क, **(1979)**

8 स्कीनर बी. एच., साइंस एण्ड ह्यूमैन् बिहेवियर, मैकमिलन अग्रवाल पब्लिकेशन, न्यूयार्क, **(1898)**

9 सेनापति., निर्देशन एवं परामर्श पर प्रमाप की प्रभाविकता का बी.एड. स्तर पर उपलब्धि एवं प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन.''एम.एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि. इन्दौर (**1998**),

10 पवॉर एम., कक्षा आठवी के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी व्याकरण विषय पर प्रमाप का निर्माण'' बी.एड. परियोजना शिक्षा संस्थान''एम.एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि. इन्दौर. दे.अ.वि.वि. इन्दौर., **(2000)**

11 पटेल., हिन्दी व्याकरण शिक्षण में संकल्पनात्मक प्रमाप अनुदेशन व स्वीकृत अभिमुखी संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान अनुदेशन की प्रभाविता का विद्यार्थियों की उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन एवं प्रमाप के प्रति प्रतिक्रिया का मापन किया, एम.एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि. इन्दौर. **(2001)**

12 महाराणा एन., निर्देशन एवं परामर्श में प्रमापीकृत और अप्रमापीकृत प्रविधियों पर प्रमाप की प्रभाविता का बी.एड. स्तर पर उपलब्धि और प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन किया, एम.एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि. इन्दौर. **(2003)**

13 हुरमाडे आर., डी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के लिए वायु एवं जल प्रदूषण शिक्षा पर अनुदेशात्मक सामग्री का विकास कर उसकी प्रभाविता की उपलब्धि एवं विकसित अनुदेशन सामग्री के प्रति प्रतिक्रियाओं के आधार पर अध्ययन, एम. एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि. इन्दौर**. (2004)**

14 पाटीदार महेन्द्र. ने निर्देशन एवं परामर्श में निर्देशन सेवाओं के संगठन पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रमाप की प्रभाविता का विद्याथियों की उपलब्धि एवं प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन किया, एम.एड. लघुशोध प्रबंध शिक्षा संस्थान दे.अ.वि.वि. इन्दौर**. (2004)**

15 पाठक पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान ,अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, भारत **(2012)**

16 शर्मा आर.ए., अभिक्रमित अनुदेशन, लायल बुक डिपो, मेरठ, भारत **(1993)**

17 वर्मा पी. एवं श्रीवास्तव डी.एन., आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा. भारत **(1997)**

18 द्विवेदी क. एवं वशिष्ठ के. सी., सामान्य मनोविज्ञान ,साहित्य प्रकाशन आगरा, भारत **(1998)**

19 जायसवाल एस., "शिक्षा में निर्देशन और परामर्श" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, भारत **(1998)**

20 पाल हं,. प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, भारत **(2006)**

21 भटनागर सु., शिक्षा मनोविज्ञान, आर॰ लाल डिपो, मेरठ, भारत **(2010)**

22 श्रीवास्तव एम.एन., विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा तथा निर्देशन एवं परामर्श'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, भारत **(2012)**

23 जोशी ए. एवं जोशी के., शैक्षिक तकनीकी, शर्गव श्वन कचहरी घाट, आगरा, भारत **(2003)**

24 कुलश्रेष्ठ एस.पी. शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, भारत **(1982)**